कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ✓

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन बुधवार सोमवार

दिनांक 16 मार्च 2020

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

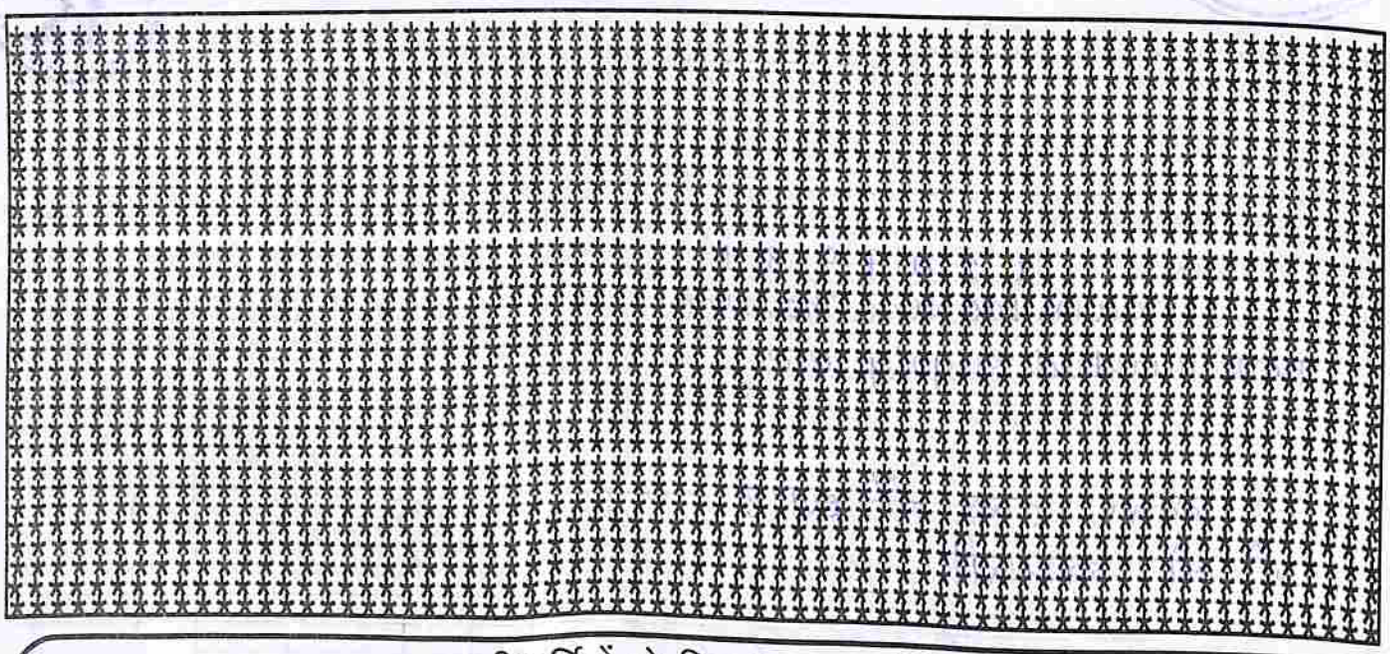
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019



परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

1) तत्र ---------- जालमादायोड्डीयताम् ।"

- संदर्भ ⇒ प्रस्तुत गद्यांश हमारी संस्कृतपाठ्यपुस्तिका 'स्पन्दना' के पाठ 2 'संघे शक्तिः' से लिया गया है। मूलतः यह पाठ नारायण शर्मा द्वारा रचित 'हितोपदेश' के प्रथम परिच्छेद 'मित्रलाभ' की प्रथम कथा से लिया गया है।

- प्रसंग ⇒ प्रस्तुत गद्यांश में यह बताया गया है कि व्याध द्वारा ~~जाल में~~ बिछाये जाल में फँस जाने के बाद किस प्रकार सभी कबूतर एक होकर जाल को लेकर उड़ जाते हैं और व्याध से बच जाते हैं। प्रस्तुत गद्यांश में "संगठन में शक्ति होती है" उसका उदाहरण दिया गया है।

- अनुवाद ⇒ कपोतराज अर्थात चित्रग्रीव की लज्जा सुनकर तथा उसका अनादर करके सभी कबूतर वहाँ [व्याध द्वारा बिछाये जाल] पर बैठ जाते हैं। इसके बाद सभी जाल में फँस जाते हैं। उसके बाद वचनों से वहाँ फँसे हुए सभी कबूतर एकदूसरे की निन्दा करते हैं या तिरस्कार करने लगते हैं। उनका तिरस्कार सुनकर चित्रग्रीव बोलता है - "इसमें किसी का दोष नहीं है। विपत्ति के समय आश्चर्य करना कुत्सित पुरुषों का लक्षण होता है। इसीलिए यहाँ धीरज / धैर्य रखो और प्रतीकार [उपाय] के बारे में सोचते हैं। अभी ऐसा ही करना चाहिए। हमसभी एक होकर जाल को लेकर उड़ जाते हैं।"

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

• विशेष ⇒ i) सरल व सरस भाषा का प्रयोग किया है।
ii) गद्यात्मक भाषा शैली है।
iii) कपोतास्तत्रोपविष्टा: ⇒
कपोता: + तत्र + उपविष्टा:
[सत्व सन्धि व गुण सन्धि]
iv) नायमस्य ⇒ न + अयम् + अस्य
[दीर्घ सन्धि व अनुस्वार सन्धि]
v) कापुरुष ⇒ कुत्सित पुरुष: [कर्मधारय समास]
vi) इदानीमप्येवं ⇒ इदानीम् + अपि + एवं
[अनुस्वार व यण् सन्धि]

प्र॰ यथा ---------- शुश्रूषुरधिगच्छति ॥

• संदर्भ ⇒ प्रस्तुत श्लोक हमारी संस्कृत पाठ्यपुस्तक "स्पन्दना" के पाठ 10 "सुभाषित-रत्नानि" से लिया गया है। "सुन्दर वचनों को "सुभाषितम्" कहा जाता है।"

• प्रसंग ⇒ प्रस्तुत श्लोक में गुरु से कि किस प्रकार विद्यार्जन करना चाहिए- यह बताया गया है।

• अनुवाद ⇒ जिस प्रकार मनुष्य फावड़े से कुदाली कर जमीन को खोदकर पानी प्राप्त करके अपनी पिपासा को शान्त करता है, उसी प्रकार शिष्य को भी गुरु की सेवा - शुश्रूषा कर, उनसे ज्ञान व विद्या प्राप्त कर अपनी ज्ञान रूपी पिपासा को शान्त करना।

BSEB-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

चाहिए।

• विशेष ⇒ i) सरल व सरस भाषा का प्रयोग किया गया है।
ii) पद्यात्मक भाषा शैली का प्रयोग किया है।
iii) वार्यधिगच्छति ⇒ वारि + अधिगच्छति [यण् सन्धि]
iv) शुश्रूषुरधिगच्छति ⇒ शुश्रूषु : + अधिगच्छति [रुत्व सन्धि]
v) खनित्रेण ⇒ नपुसकलिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन
vi) विद्याम् ⇒ स्त्रीलिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, एकवचन।

3) अपदो ---------- पण्डित :।

• संदर्भ ⇒ प्रस्तुत : श्लोक : अस्माकं संस्कृतपाठ्यपुस्तकात् पञ्चपाठात् "वाक्केलि :" उद्धृत : अस्ति। यः

• प्रसंग ⇒ प्रस्तुते श्लोकेऽस्मिन् एका प्रहेलिका अस्ति।

• व्याख्या ⇒ प्रस्तुते श्लोके कविः कथयति यत् तत् वस्तु : नाम वदत यः पदरहित भवति अस्ति परन्तु दूरगामी अस्ति। यः अक्षरयुक्त : भवति न परन्तु पण्डित : नास्ति। यः मुखरहित : भवति परन्तु स्पष्टवक्ता अस्ति। यः अस्याः प्रहेलिकायाः उत्तरं जानाति सः पण्डित अस्ति। प्रहेलिकायाः उत्तरम् अस्ति - पत्रम्।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

• विशेष ⇒ i) सरला सरसा च भाषाया: प्रयोगम् अस्ति।
ii) पद्यात्मक भाषा शैली: अस्ति।
iii) अपदो ⇒ पद रहित [अव्ययी भाव समास]
iv) अमुख: ⇒ मुख रहित [अव्ययी भाव समास]
v) साक्षरो न ⇒ साक्षर: + न [उत्व सन्धि]
vi) स पण्डित: ⇒ स: + पण्डित: [लोप सन्धि]

५) हा भगवन्! ---------- दद्यताम:।

• संदर्भ ⇒ प्रस्तुत: नाट्यांश: अस्माकं संस्कृत-पाठ्यपुस्तिकाया: एकादशपाठात् "स्वदेश: कथं रक्षेयम्" उद्धृत: अस्ति। अस्य एकांके: रचना नारायणशास्त्री एकांकीकार: कृतवान्।

• प्रसंग ⇒ प्रस्तुते नाट्यांशेऽस्मिन् मेवाड़राज्यस्य दुर्दशाया: वर्णनमस्ति। अस्य सहापि वर्णयति महाराणाप्रताप: तस्य असमर्थ स्थितौ मेवाडराज्यं त्यक्तुम् समुद्यत:।

• व्याख्या ⇒

प्रथम भिल्ल: ⇒ हा भगवन्! अद्य मेवाडराज्ये कीदृश: समय: आगत:? [अर्थात् समय: सम्यक् नास्ति] महाराणा प्रताप: अपि तस्य देशं त्यक्त्वा कोऽन्यत्र प्रस्थान: करोति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

द्वितीयः भिल्ल : ⇒ कोऽपि न जानाति यत् इयम् मेवाड़राज्यस्य भाग्ये किं लिखितम् अस्ति ? हे दीनानां दयाल': ! परम ईश्वर : ! भवान् अपि अधुना इयान् कठोर : ~~क्स्मात्~~ कथं जायते ?

तृतीयः भिल्ल : ⇒ हा धिक् ! अयम् वराकस्य [महाराणाप्रतापस्य] समीपे कश्चनापि न अस्ति। अस्य समीपे न तु जीवनसामाग्री किञ्चित् विद्यते न तु युद्ध सामाग्री। सः अत्यंत दोलायमानः ~~परिस्थित~~ दशायाम् अस्ति। वयम् मातृभूमेः इमाम् (इयाम्) दुर्दशाम् अस्माक नेत्रेण कथं द्रक्ष्यामः ?

BSER-167/2020

• विशेष ⇒ i) सरलाः च सरसा च भाषायाः प्रयोगम् अस्ति।
ii) पद्यात् नाट्यात्मक भाषा शैली अस्ति।
iii) आगत : ⇒ आ + गम् + क्त प्रत्यय
iv) परित्यज्य ⇒ परि + त्यज् + ल्यप् प्रत्यय
v) जात : ⇒ जन् + क्त प्रत्यय
vi) परमेश्वर : ⇒ परम् + ईश्वर : इति [कर्मधारय समास]

5) i) 'जयसुरभारति!' इति पाठस्य लेखक : हरिरामाचार्य : अस्ति।

ii) इयम् अविनयस्य अभूमिः।

iii) प्रतापाय भामाशाहः प्रभूतं धनं दत्तवान्।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

v) सतां विभूतयः परोपकाराय।

vi) खलस्य ~~विवादाय~~ विवादाय विद्या भवति।

viii) कविः सूदनेन रचितं काव्यं "सुजानचरितम्" अस्ति।

6) संस्कारस्य अवसरे आचार्यः ~~किम्~~ कम् उपदिशति?

7) कः तेन सह तस्यालयं गतः?

8) कस्य अपरं नाम सुजानसिंहः आसीत्?

9) विद्यासमृद्धः केन विद्वेयः?

10) प्रथम श्लोक

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तत् भारत नाम भारती यत्र सन्ततिः।

द्वितीय श्लोक

जय जय हे भगवति सुरभारति! तव चरणौ प्रणमामः।
नाद-ब्रह्ममयि जय वागीश्वरि, शरणं ते गच्छामः॥

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

11. अस्माकं ---------- अस्ति।

(क) वर्षाऋतु :।

(ख) (i) अस्माकं देशे षड् ऋतव : नवचेतना सञ्चरणाय समायान्ति।

ii) वर्षाकाले आकाशे मेघा : समायान्ति।

iii) वर्षाजलैः स्नाता वसुन्धरा मोदते।

iv) कृषकाणां कृते वृष्टि : एव जीवनम् अस्ति।

v) ~~वर्षाकाले~~ वर्षाकाले ग्रामे मार्गाः पङ्कमया : भवन्ति।

(ग) (i) वर्षाकाल :

ii) सर्वे

iii) ~~मोदते~~ स्नाता

iv) वृक्षा :

12. सन्धि विच्छेद

i) यथेच्छम् = यथा + इच्छम् गुण सन्धि

ii) प्रेजते = प्र + एजते परस्रप सन्धि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

13) सन्धि

i) दिक् + अम्बर : ⇒ दिगम्बर : जश्त्व सन्धि

ii) राम : + हसति ⇒ रामो हसति ~~उत्व सन्धि~~

14) समास

i) कृष्णकाक : ⇒ कृष्णा : काक : इति (कर्मधारय समास)

ii) धेनुपन्नगौ ⇒ धेनुश्च पन्नगश्च [द्वन्द्व समास]

iii) जनानाम् अभाव : ⇒ निर्जनम् [अव्ययी भाव समास]

15. कारक

i) उदयपुरं परित : जलम् अस्ति।

- विभक्तिम् ⇒ द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)
- कारणम् ⇒ "परित :" पदस्य योगेन द्वितीया विभक्ति भवति।

ii) छात्र : विद्यालयात् बहि : गच्छति।

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

- विभक्तिम् = पञ्चमी विभक्ति [अपादान कारक]
- कारणम् = "बहिः" पदस्य योगेन पञ्चमी विभक्ति भवति।

iii) दैत्येभ्यः हरिः अलम्।

- विभक्तिम् = चतुर्थी विभक्ति [सम्प्रदान कारक]
- कारणम् = "नमःस्वस्तिस्वधालंवषड्योगाच्च" इति सूत्रः योगेन चतुर्थी विभक्ति भवति।

16. i) नाविकः नौकया नदीं तरति। (नौ + ठन्)

ii) गुरुं सेवमानः शिष्यः सुखं लभते। (सेव + शानच्)

17. i) राज्ञी = राजन् + ङीप् प्रत्यय

ii) देवता = देव + तल् प्रत्यय

18. अव्यय

i) वर्षागमे चातकमेकं विहाय क्वान्यत्र कस्य अपि रमेत चित्तम्।

ii) अश्रद्धेयमेतत् यत् तृणानां वह्निना सह संगमः।

IISER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	iii)	भवान् कुतः समायातः श्रीमन्।
	•	वाच्यपरिवर्तन
	19.	सीता गीतं गायति।
	⇒	सीतया गीतं गीयते।
	20.	मया ग्रन्थः पठ्यते।
	⇒	अहं ग्रन्थं पठामि।
	21.	तेन सुप्यते।
	⇒	सः स्वपिति।
	22.	समयलेखनम्
	i)	सांयकाले चतुर्वादने विद्यालयस्य अवकाशः भवति।
	ii)	अहं प्रातः सपादसप्तवादने प्रातराशं करोमि।
	23.	अशुद्धि संशोधन
	i)	अहं भोजनेन कृते गृहं गमिष्यामि।
	⇒	अहं भोजनस्य कृते गृहं गमिष्यामि।
	ii)	गुरवे अधीते।
	⇒	गुरोः अधीते।

ISER-07/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

iii) सः पादात् खञ्जः अस्ति।
⇒ सः पादेन खञ्जः अस्ति।

२४. सेवायाम्

श्रीमन्तः प्रधानाध्यापक महोदयाः,
राजकीय माध्यमिक विद्यालयः
धौलपुरम्।

विषयः- नियमित छात्रप्रमाणपत्र प्राप्त्यर्थम्।

महोदयाः,
सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् अहं विद्यालयस्य नवमकक्षायाः नियमित छात्रोऽस्मि। अहं संस्कृत श्लोक प्रतियोगितायां भागं गृहीतुम् इच्छामि। अतः प्रार्थना अस्ति यत् मह्यं नियमित-छात्र प्रमाणपत्रं प्रदाय अनुगृहीष्यन्ति भवन्तः।
सधन्यवादम्।

भवदास्ताकारी शिष्यः
रमेशः
नवमी कक्षा

२५. संवाद लेखन

विजयः - अजय! ग्रीष्मावकाशे त्वं कुत्र अगच्छः?

अजयः - विजय! अहं ग्रीष्मावकाशे अरुणाचलप्रदेशम् अगच्छम्।

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

विजय : - अहो अतिरमणीय : स : प्रदेश : ।

अजय : - आम्, तत्र वाकपशुम् अपश्यम् ।

विजय : - किं त्वं गोम्पामन्दिरं न अपश्य : ?

अजय : - मया सह मम जननी जनक : आस्ताम् ।
वयं सर्वे गोम्पामन्दिरम् अगच्छाम : ।

विजय : - यूयं कदा तत : आगच्छत ।

अजय : - वयं गतमासे एव आगच्छाम ।

२६. संस्कृत वाक्य निर्माण

ii) बालक को फल अच्छा लगता है ।
⇒ बालकाय फलं रोचते ।

iii) हिमालय से गङ्गा निकलती है ।
⇒ हिमालयाद् गंङ्गा निर्गच्छति ।

iv) मैं भी गाँव जाता हूँ ।
⇒ अहमपि ग्रामं गच्छामि ।

v) ~~कवियो में कालिदास श्रेष्ठ है ।~~
⇒ ~~कवीषु कालिदास : श्रेष्ठ~~

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

vi) वृक्ष के ऊपर पक्षी हैं।
⇒ वृक्षस्योपरि खगाः सन्ति।

27. i) वने एकः सिंहः प्रतिवसति स्म।

ii) सः प्रतिदिनम् अनेकान् पशून् हन्ति।

iii) सर्वे पशवः गत्वा सिंहं अवदन्।

iv) स्वामिन् एकेन मृगेण अपि तव तृप्तिः भवति।

v) अद्यप्रभृतिः प्रतिदिनम् एकः मृगेन्द्रः भक्षणार्थम् आगमिष्यति।

vi) एवं तव भोजनं क्लेशं विना अपि भविष्यति।

28. यथाक्रम - संयोजन

i) शृगालः वनात् नगरम् आगतः।

~~ii) वन्यजन्तुषु तस्य आधिपत्यम् अभवत्।~~

ii) शृगालः नीलीभाण्डे पतितः।

iii) शृगालः उत्थाय वनं प्रति पलायितः।

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	iv)	सर्वे शृगालाः महाशब्दं कृतवन्तः।
	v)	सः अन्यान् शृगालान् दूरं कृतवान्।
	vi)	वन्यजन्तुषु तस्य आधिपत्यम् अभवत्।

**** ****

"समाप्त"

BSER-167/2020